पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 01.03.2018 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

उड़ीसा में युवक निर्माण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उड़ीसा

के तत्वावधान में

''प्रान्तीय युवक निर्माण शिविर''

दिनांक 5 मई से 11 मई 2018 तक गुरूकुल संस्कृत विद्यालय, राउरकेला-4, ओडिशा में लगेगा। सम्पर्क-पं. धनेश्वर बेहरा, प्रान्तीय अध्यक्ष, 9438441227

वर्ष-34 अंक-19 चैत्र-2074 दयानन्दाब्द 194 01 मार्च से 15 मार्च 2018 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.03.2018, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

॥ ओ३म् ॥

जहाँ नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

प्रण करते हैं संस्कृति की शाम नहीं होने देंगे, वीर शहीदों की समाधी बदनाम नहीं होने देंगे।
जब तक तन में एक बूंद भी लहु की बाकी है, भारत की आज़ादी को गुमनाम नहीं होने देंगे।

शहीदों की अमानत है – भारत की आजादी

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में

अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 87 वें बलिदान दिवस पर

एक शाम शहीदों के नाम: भव्य संगीत संध्या

शुक्रवार, 23 मार्च 2018, सायं: 4:30 से 8:00 बजे तक

स्थान: आर्य समाज सुभाष नगर, ब्लॉक-9, पश्चिमी दिल्ली-110027

यज्ञ ब्रह्मा: आचार्य महेन्द्र भाई, वेद पाठ: पं. अमितांशु शास्त्री

गायक कलाकार: नरेन्द्र आर्य ''सुमन''* अंकित उपाध्याय

मुख्य अतिथि : **श्री अजय माकन** (प्रदेश अध्यक्ष, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी)

विशिष्ट अतिथि : **श्री करण सिंह तंवर** (पूर्व विधायक), **श्री सुरेन्द्र सेतिया** (निगम पार्षद), **श्री सुभाष आर्य** (पूर्व महापौर दक्षिण दिल्ली)

अध्यक्षता : **श्री रवि चड्डा** (प्रधान, पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल)

गरिमामय उपस्थिति: श्री जगदीप सिंह (विधायक), रमेश कुमारी भारद्वाज, राजकुमारी ढिल्लो, यशपाल आर्य (पूर्व पार्षद), जगदीश आर्य, ओम सपरा (मेट्रोपोलटेन मजिस्ट्रेट) नरेश अग्रवाल, भरत मेहता, संजय चंडोक, राकेश चंडोक, हिमांशु पाहुजा, अजय चौधरी, गगन साहनी, रत्नाकर बत्रा, एस.एन. डंग, प्रकाशचन्द आर्य, अशोक आर्य, राजपाल पुलियानी, बलदेव राज आर्य, वेद प्रकाश, सुनीता पासी, पुष्पलता वर्मा, अमरसिंह सहरावत, अमरनाथ बत्रा, ओमप्रकाश अग्रवाल, महेन्द्र बूटी, चन्द्रमोहन खन्ना, उपेन्द्रनाथ तलवार, जगदीश गुलाटी, सत्यानन्द आर्य, सुरेन्द्र कोछड़, कस्तूरीलाल मक्कड़, ईशकुमार मक्कड़, डॉ. सुन्दरलाल कथुरिया, रामकृष्ण सतीजा, अजय तनेजा, वेदपाल आर्य, जगवीर सिंह आर्य, डॉ. मुकेश सुधीर, जीवनप्रकाश शास्त्री, शान्ता तनेजा, अर्जुनदास बत्रा, जगदीश मलिक, रघुनाथसिंह यादव, मानवेन्द्र शास्त्री, बलदेव सचदेवा, अशोक कथूरिया, श्रीपाल आर्य, लक्ष्मणदेव छाबड़ा, भारतभूषण धूपड़, नरेश विज, सुरेन्द्र बुद्धिराजा, विश्वनाथ आर्य, सुरेन्द्र मानकटाला, सुनीता बुग्गा, उर्मिला आर्या, संतोष वधवा, धर्मपाल परमार, नरेन्द्र कस्तूरिया, अंजु जावा, अमित मान, सुभाष मित्तल, दिनेश आहुजा, अनु चौहान, भगतसिंह राठी, प्रेमकान्त बत्रा, महेश भयाना, डॉ. विनोद खेत्रपाल, पं. सुरेश झा, अखिलेश शर्मा, सुरेश टंडन, विजय कपूर, आदित्य आहूजा, सुषमा अरोड़ा, अंजु चौधरी, निर्मल मदान, कृष्णा भाटिया, मधु बिदानी, नीरू दुआ, पूजा ढींगरा, सुलेखा, सीमा आर्य, कृष्णा भाटिया, ज्योति कपूर, रेखा कपूर, संतोष शास्त्री, मायाराम शास्त्री, दिनेश आर्य, ओमवीर सिंह गौरव झा, राकेश आर्य, वरुण आर्य, माधव सिंह, शिवम मिश्रा

देश के अमर शहीदों को श्रद्धाजंली अर्पित करने सपरिवार पंहुचे

ऋषि लंगर: रात्रि 8 से 9 बजे तक

-: निवेदक :-

डॉ. अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	**यशोवीर आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**रामकुमार सिंह** प्रान्तीय संचालक	**पुनीत विज** प्रधान समाज	**राजेन्द्र लाम्बा** मंडल महामन्त्री	**संजीव आर्य** संयोजक
कृष्णचन्द पाहूजा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**देवेन्द्र भगत** प्रेस सचिव	**दुर्गेश आर्य** राष्ट्रीय मन्त्री	**सिकंदर अरोड़ा** मंत्री समाज	**पवन अरोड़ा**	**मनोज ढींगरा** उपप्रधान आर्य समाज, सुभाष नगर
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	**सुरेश आर्य** राष्ट्रीय मन्त्री	**सुशील आर्य** राष्ट्रीय मन्त्री	**ओम प्रकाश नागपाल** कोषाध्यक्ष समाज	**अरुण आर्य** प्रांतीय महामंत्री	**सौरभ गुप्ता** प्रधान शिक्षक

कार्यालय: आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, फोन: 9810117464, 8860624559

ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना क्यों की?

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आर्यसमाज एक सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलन है। यह वैदिक सिद्धान्तों से देश की राजनीति को भी दिशा देने में समर्थ है। वेद, मनुस्मृति, रामायण एवं महाभारत आदि ग्रन्थों में राजा के कर्तव्यों सहित एवं समाज एवं देश की सुव्यवस्था संबंधी वैदिक विधानों की भी चर्चा है। आर्यसमाज की सभी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बिन्दु व प्रेरणा स्रोत वेद है। वेद क्या हैं? वेद सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की प्रेरणा से चार आदि ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को दिया गया ज्ञान है। यह ज्ञान ईश्वर ने उन चार ऋषियों के निजी उपयोग के लिए ही नहीं अपितु उन्हें अन्य सभी मनुष्यों का प्रतिनिधि बनाकर दिया था जिससे वह सभी लोगों को वेदों का ज्ञान करा सकें और उन्होंने ऐसा किया भी। वेद और धर्म दोनों शब्द एक दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं। वेद की सभी शिक्षायें सत्य है और सभी मनुष्यों को इसका पालन करना अपनी ऐहिक व पारलौकिक उन्नति के लिए आवश्यक है। वेदों की शिक्षाओं का पालन ही धर्म कहा जाता है। वेदों में सत्य का व्यवहार करने व परहित के कार्यों में जीवन व्यतीत करने की आज्ञा है। यही मनुष्य का धर्म भी है।

वेद मनुष्यों में भौगोलिक कारणों, रंग—रूप व अन्य किसी प्रकार से भी भेद नहीं करता। उसके लिए सभी मनुष्य काले, गोरे, अगड़े व पिछडे, स्त्री व पुरुष समान हैं। सबको समान रूप से ईश्वरोपासना, यज्ञ, वेदाध्ययन, वेदाचरण व अन्य सभी अधिकार अपनी अपनी गुण, कर्म, स्वभाव व योग्यता के अनुसार प्राप्त हैं। महाभारतयुद्ध के बाद वेदों का यथार्थ ज्ञान अप्रचलित होकर विलुप्त प्रायः हो गया था। इस कारण देश व संसार में अंधकार फैला और अनेक मत—मतान्तर उत्पन्न हुए जो अधिकांशतः अविद्या से ग्रस्त थे। आज संसार में जितने भी मत प्रचलित हैं उनमे वेद व सनातनी पौराणिक मत के अतिरिक्त मुख्यतः ईसाई व इस्लाम मत का प्रचार प्रसार अधिक है। ईसाई व इस्लाम मत से पूर्व बौद्ध व जैन मत भी प्रचलन में आये और आज भी इनका अस्तित्व व प्रचार है। बौद्ध, जैन, ईसाई व इस्लाम आदि मत इन मतो से 1.96 अरब वर्ष पूर्व आरम्भ व प्रचलित वेद धर्म से प्रेरणा व सहायता नहीं लेते। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि जब इन मतों की स्थापना व आरम्भ हुआ, उस समय यरुशलम, मक्का मदीना आदि स्थानों पर वेदों का प्रचार व जानकारी लोगों को नहीं थी। ऐसा न होने पर भी वेदों की बहुत सी शिक्षायें इन मतों में पाई जाती हैं। बौद्ध और जैन नास्तिक मत यद्यपि लगभग 2500 वर्ष पूर्व भारत में अस्तित्व में आये परन्तु उनके समय वेदों के नाम पर यज्ञों में जो पशु हिंसा प्रचलित थी, उनका इन मतों ने विरोध किया। इस विरोध के कारण ही यह भी वेदों से प्रेरणा नहीं लेते। यह बात अन्य है कि वेदों के आधार पर प्रचिलत मोक्ष आदि शब्द इन्होंने वैदिक परम्परा से ही लिये हैं। इन सभी मतों से पूर्व व महाभारत काल के बाद वेदों की कुछ सत्य व कुछ असत्य मान्यताओं पर आधारित सनातन धर्म प्रचलित हुआ जो शुद्ध वैदिक धर्म से कुछ कुछ विकृत मत था। बाद में पुराण आदि की रचना होने से इसमें और अनेक वेदविरुद्ध बातें प्रचलित हुईं।

समय व्यतीत होने के साथ सनातनी पौराणिक मत में अनेक अज्ञान की बातें, अन्धविश्वास एवं कुरीतियां आदि उत्पन्न हो गईं। इनके परिणाम से ही इस मत के अनुयायी अवैदिक मान्यताओं व परम्पराओं अवतारवाद, बहुदेवतावाद, मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, जन्मना जातिवाद आदि को मानने लगे जो वर्तमान में भी विद्यमान हैं। महाभारत काल से पूर्व गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी जिसका विकृत रूप जन्मना जातिवाद अस्तित्व में आया। इस जन्मना जातिवाद व वर्णव्यवस्था के विकृत रूप ने समाज में अव्यवस्था को जन्म दिया जिससे समाज व देश कमजोर हुआ और यवनों व मुस्लिमों का गुलाम भी हुआ। इस गुलामी में मुख्य कारण मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, धार्मिक अन्धविश्वास, मिथ्या व अज्ञानपूर्ण परम्परायें ही मुख्य थीं। ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी में भारत अधिकांशतः अंग्रेजी राज्य बन चुका था। ऐसे समय उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देश के धार्मिक व सामाजिक जगत में वेद विद्या से देदीप्यमान महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ। महर्षि दयानन्द दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती, मथुरा के सुयोग्य शिष्य थे। गुरु ने उन्हें देश व समाज से अज्ञान दूर कर वेद मत स्थापित करने की प्रेरणा की थी। इस परामर्श को महर्षि दयानन्द जी ने स्वीकार किया था और सन् 1863 में मथुरा से आगरा आकर धर्म प्रचार का कार्य करना आरम्भ कर दिया था। आगरा में रहते हुए वह पौराणिक मान्यताओं का खण्डन करते थे। उन्होंने वहां रहते हुए सन्ध्या नाम की एक लघु पुस्तक लिख कर उसे प्रकाशित कराया और उसका वितरण कराया। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने सार्वजनिक जीवन में वेद और आर्ष साहित्य के आधार पर निश्चित सत्य मान्यताओं के प्रचार व प्रसार को अपना लक्ष्य बनाया था और वेद विरुद्ध मान्यताओं व विचारों का वह युक्ति, तर्क व वेद प्रमाणों से खण्डन भी करते थे।

आर्यसमाज की स्थापना ऋषि दयानन्द सरस्वती जी ने मुम्बई नगरी में 10 अप्रैल, सन् 1875 को की थी। इसके लिए उन्हें मुम्बई के प्रमुख आर्य पुरुषों ने प्रेरित किया था। ऋषि ने भी समाज की स्थापना पर अपनी सम्मति दी थी और वहां के सत्पुरुषों को सावधान भी किया था कि आर्यसमाज का संचालन विधि विधान के अनुसार योग्य पुरुषों द्वारा होना चाहिये। यदि इसमें व्यवधान हुआ तो परोपकार के इस कार्य से वह उद्देश्य पूरा नहीं हो सकेगा जिसके लिए यह समाज स्थापित किया जा रहा है। आर्यसमाज का उद्देश्य वही था जो ऋषि दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानन्द जी ने उन्हें प्रेरित किया था एवं ऋषि भी उस पर पूर्णरूपेण आश्वस्त थे। वह उद्देश्य यही था कि वेदों के प्रचार से समाज व विश्व से अज्ञान, असत्य व अविद्या को मिटाया जाये और उसके स्थान पर सत्य व विद्या से पूर्ण वैदिक मान्यताओं के अनुसार समाज, देश व विश्व को बनाया जाये। अविद्या जब दूर होती है तो मनुष्य ईश्वर, जीव व प्रकृति सहित सभी कार्य पूर्ण ज्ञानपूर्वक करता है जिसमें कहीं किंचित अज्ञान व अन्धविश्वास की सम्भावना नहीं रहती। यदि सभी व अधिकांश मनुष्यों की अविद्या दूर हो जाये तो समाज व देश सुख का धाम बन सकता है। इसी कारण वेद विश्व को श्रेष्ठ वा आर्य बनाने का उद्घोष करते हैं।

आज संसार में अविद्या व्याप्त है। अविद्या इस कारण कि संसार के 90—95 प्रतिशत लोग वेद ज्ञान से अपरिचित होने के साथ ईश्वर व जीवात्मा के सत्यस्वरूप को नहीं जानते और न ही उन्हें कर्मफल व्यवस्था का ज्ञान है, न पुनर्जन्म के सिद्धान्त का और न ही जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य का पता है। वह यह भी नहीं जानते कि वह प्रतिदिन जो कर्म करते हैं उसका परिणाम उनके इस जीवन व मृत्यु के बाद क्या होगा? इन सब प्रश्नों के यथार्थ उत्तर देने और लोगों को असत्य मार्ग से हटाकर सत्य पर आरूढ़ करने के लिए ही महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज अन्य संस्थाओं की भांति कोई संस्था नहीं अपितु यह तो एक वेदप्रचार आन्दोलन है। एक ऐसा आन्दोलन जो इतिहास में पहले कभी किसी ने किया नहीं और न आर्यसमाज के अलावा किसी में करने की सामर्थ्य है। यह अविद्या वेदों के अध्ययन, स्वाध्याय व वेदाचार्यों के उपदेश से ही दूर हो सकती है। यही कार्य व इसका प्रचार आर्यसमाज करता है। आर्यसमाज ने अतीत में वेद प्रचार सहित सामाजिक सुधार व देशोन्नति के अनेक कार्य किये हैं। शिक्षा के प्रचार प्रसार में भी आर्यसमाज की अग्रणीय भूमिका है। सभी मत—मतान्तरों की अविद्या से भी आर्यसमाज ने सामान्यजनों को परिचित कराया है। लोगों को सच्ची ईश्वरोपासना एवं अग्निहोत्रादि करना सिखाया है। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना जातिवाद वा प्रचलित जन्मना वर्णव्यवस्था, बालविवाह, सतीप्रथा आदि का आर्यसमाज विरोध करता रहा है और इन कार्यों में कहीं आंशिक तो कहीं अधिक सफलता भी आर्यसमाज को मिली है। छुआछूत आदि का भी आर्यसमाज विरोधी रहा है और आर्यसमाज के प्रचार से यह प्रथा भी कमजोर पड़ी है। आर्यसमाज ने आजादी के आन्दोलन में अनेक देशभक्त क्रान्तिकारी नेता व आन्दोलनकारी देश को दिये हैं। पं. श्यामजीकृष्णवर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, लाला लाजपतराय, पं. रामप्रसाद बिस्मिल व शहीद भगत सिंह आदि ऋषि दयानन्द के साक्षात अनुयायी, शिष्य व उनके परिवारों से ही थे।

ऋषि दयानन्द देश को अज्ञान, अविद्या व अन्धविश्वासों से पूर्णतया मुक्त करना चाहते थे। ऐसा होने पर ही यह देश संगठित होकर विश्व की महान अजेय शक्ति बन सकता था। देश की आजादी के बाद देश में जिन नीतियों का अनुसरण किया गया उसके परिणाम से देश दिन प्रतिदिन अविद्या में फंसता जा रहा है और धार्मिक व सामाजिक दृष्टि से कमजोर हो रहा है। आज पहले से कहीं अधिक वेद प्रचार की आवश्यकता है परन्तु आज जिस प्रकार के योग्य प्रचारक विद्वानों व कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है उस कोटि के समर्पित भावना वाले विद्वान, प्रचारक व कार्यकर्ता हमारे पास या तो हैं नहींया बहुत ही कम हैं। वर्तमान में जिससे जितना भी हो सके उसे ऋषि के वेद प्रचार कार्य को तीव्र गति प्रदान करनी है। ईश्वर की कृपा होगी तो वेद प्रचार का कार्य गति पकड़ेगा और सफल भी होगा। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के वेद प्रचार के उद्देश्य, अविद्या के नाथ और विद्या की वृद्धि तथा इसके साथ ही सत्य के ग्रहण व असत्य के त्याग का जो आन्दोलन किया था उसे हम जारी रखें और गति प्रदान करें। ईश्वर इस कार्य को सफलता प्रदान करें।

—196 चुक्खूवाला—2, देहरादून—248001, फोनः09412985121

शोक समाचारः विनम्र श्रद्धांजलि

1 श्रीमती ज्ञानवती जैन, आयु—80 वर्ष,(कमला नगर, दिल्ली) सासू मां श्री विजय आर्य, प्रधान, आर्य समाज, इन्द्रापुरम का निधन।
2. श्रीमती कृष्णा अजमानी (प्रधाना, स्त्री आर्य समाज, रमेश नगर, दिल्ली) का निधन।
3. श्री संजय क्वात्रा, आयु—48 वर्ष (हरिनगर,दिल्ली) का निधन।
4. श्री प्रेमसागर गुप्ता (संरक्षक, आर्य समाज, सोहनगंज, दिल्ली) का निधन।

अमेरीकी शासन की कुछ विशेषताएं

—कृष्णचन्द्र गर्ग

1.अमेरिका में देष के लिए राष्ट्रपति, प्रान्त के लिए राज्यपाल तथा नगर के लिए नगरपालिका अध्यक्ष – ये सभी सीधे जनता के द्वारा चुने जाते हैं। इसलिए सांसदों को, विधायकों को और पार्षदों को चुनाव के पश्चात आपसी गठजोड़ करने की या खरीद–बेच करने की जरूरत नहीं पड़ती।

2.विधायिका (Legislative) और कार्यपालिका (Executive) अलग अलग हैं। संसद विधायिका का काम करती है और राष्ट्रपति के ऊपर कार्यपालिका की जिम्मेदारी है। सांसद तथा राष्ट्रपति सीधे तौर पर देष की जनता के द्वारा चुने जाते हैं। इसलिए उनका अस्तित्त्व एक दूसरे पर आश्रित नहीं है। इसलिए भ्रष्टाचार नहीं है।

3.सांसद और विधायक – मंत्री, मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री नहीं बनाए जाते और न ही उन्हें कोई और लाभ का पद दिया जाता है। वे सांसद और विधायक ही बने रहते हैं। इसलिए उनका सम्बंध सीधा जनता से रहता है और वे जनता के लिए अच्छी व्यवस्थाएं बनाते हैं।

4.प्रशासन में राष्ट्रपति के सहायक के रूप में सचिव (Secretaries) हैं जिनकी संख्या 15 निश्चित है। राष्ट्रपति सारे देष में से योग्यता के आधार पर सचिवों का चयन करते हैं। उनकी स्वीकृति सैनेट (ससंद का एक सदन) देती है।

5.अपने स्वार्थ के लिए कोई भी चुनाव आगे पीछे नहीं कर सकता। राष्ट्रपति और संसद के चुनावों की तिथियां संविधान के द्वारा ही निश्चित की हुई हैं।

6.अवधि (Term) – राष्ट्रपति की अवधि चार वर्ष है। कोई भी व्यक्ति दो से अधिक बार राष्ट्रपति नहीं बन सकता।

संसद के एक सदन House of Representatives की अवधि दो वर्ष है तथा दूसरे सदन सैनेट (Senate) की अवधि छः वर्ष है। हर दो वर्ष के पश्चात सैनेट के एक तिहाई सदस्य नये चुनकर आते हैं।

7. उप–चुनाव (Bye Elections) नहीं होते। राष्ट्रपति का पद खाली होने पर अगले चुनाव तक के लिए उपराष्ट्रपति को राष्ट्रपति बना दिया जाता है। उपराष्ट्रपति का पद खाली होने पर संसद की स्वीकृति से राष्ट्रपति देष में से किसी भी योग्य व्यक्ति को अगले चुनाव तक के लिए उपराष्ट्रपति बना देते हैं।

राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति का चुनाव एक जोड़े (Team) के तौर पर होता है, अलग अलग नहीं।

संसद का कोई स्थान खाली होने पर उसी निर्वाचन क्षेत्र (Constituency) का और उसी राजनैतिक दल का कोई व्यक्ति अगले चुनाव तक के लिए मनोनीत कर दिया जाता है।

संसद भी कभी भी बीच में ही भंग नहीं होती क्योंकि संसद का अस्तित्त्व किसी प्रस्ताव के पास या फेल होने पर आश्रित नहीं है। इसलिए मध्यावधि चुनाव भी नहीं होते।

8.सांसद या राष्ट्रपति अपने वेतन–भत्ते स्वयं नहीं बढ़ा सकते। इस सम्बन्ध में जब कोई प्रस्ताव पास होता है वह उस समय के सांसदों या राष्ट्रपति पर लागू नहीं होता। उनकी अवधि पूरी होने पर अगली संसद या राष्ट्रपति पर लागू होता है।

9.देष में कोई भी दिखावे का पद (Ceremonial off~ice) नहीं है। सभी के लिए पद के हिसाब से काम है तथा उसी हिसाब से वेतन है।

10.कोई भी अपराधी या आरोपी चुनाव नहीं लड़ सकता। अगर किसी सांसद या विधायक पर कोई आरोप लग जाता है तो उसे तुरन्त अपना पद छोड़ना पड़ता है।

11.मन्त्रियों के कोटे (Quotas) या सांसद निधि आदि नहीं हैं। सांसदों, सचिवों, जजों, सरकारी अफसरों आदि को सरकार की तरफ से कार, कोठी, नौकर आदि भी नहीं दिए जाते।

12.न्यायपालिका पूर्ण रूप से स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष है और शीघ्र न्याय देती है।

13.साम्प्रदायिकता–किसी भी मजहब के आधार पर देष में कोई भी कानून नहीं है। सभी कानून समता के आधार पर बने हैं। मजहब सभी के लिए एक निजी और व्यक्तिगत विषय है, राष्ट्रीय या सरकारी विषय नहीं है। किसी भी मजहब को बढ़ावा नहीं दिया जाता। इसलिए साम्प्रदायिक दंगे नहीं होते।

14.जातपात का नामोनिषान नहीं है। कोई ऊँच–नीच नहीं जानता।

15.कोई भी किसी प्रकार का भी आरक्षण नहीं है। सभी कुछ योग्यता के आधार पर है। जो जिसके योग्य है उसे वह काम मिल जाता है। योग्यता बढ़ाने के लिए सभी को अवसर उपलब्ध हैं।

16.शिक्षा–हाई स्कूल अर्थात 12 वर्ष तक की शिक्षा पूर्णतया निःशुल्क है और दस वर्ष तक की शिक्षा सभी लड़के–लड़कियों के लिए अनिवार्य है।

इसलिए जनसंख्या और बेरोजगारी नियन्त्रित हैं। बाल विवाह और बाल मजदूर नहीं होते।

17.नौकरी की सुरक्षा (Security of Service) नहीं है। इसलिए लोग मेहनत और इमानदारी से काम करते हैं। रोटी की सुरक्षा (Security of Bread) सबके लिए है।

18.अमरीकी संविधान – अमेरिका का संविधान 1787 में बना था। उसमें अब तक कुल 27 संषोधन हुए हैं। मूल संविधान तथा सभी संषोधनों को मिलाकर कुल पच्चीस पृष्ठ की पुस्तिका के आकार का अमेरिका का संविधान है।

अमेरिका की सुव्यवस्था, समृद्धि, उन्नति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का श्रेय उनके 221 वर्ष पुराने संविधान को तथा उसे बनाने वालों को ही जाता है।

19.भाषा–अमेरिका में सैंकड़ों भाषाएं बोलने वाले लोग रहते हैं। परन्तु केन्द्र सरकार तथा सभी प्रान्तीय सरकारों की भाषा एक ही है–अंग्रेजी। इसलिए सारा देष एक इकाई के रूप में उभरा है।

20.मेहनत करने वाला कोई भी व्यक्ति गरीब नहीं है। मेहनत से कोई भी व्यक्ति थोड़े ही समय में अपनी गरीबी दूर कर सकता है। शारीरिक काम करने वालों को मेहनताना दफतरों में काम करने वालों से कम नहीं मिलता।

21.राजनेताओं के पास कोई व्यक्तिगत अधिकार नहीं होते। इसलिए लोग उनके आगे पीछे नहीं फिरते। वैसे भी खुषामद करना या गिड़गिड़ाना बहुत बुरा माना जाता है। दफतरों में भी गिड़गिड़ाना नहीं पड़ता। आत्म स्वाभिमान को महत्त्व दिया जाता है।

22. अमेरिका में लड़का लड़की में प्रेम विवाह ही होते हैं। इसलिए दहेज का अभिषाप नहीं है और लड़की माता–पिता पर बोझ नहीं है। बुढ़ापे में पैंशन सबको मिलती है। इसलिए बुढ़ापे में लड़के का सहारा ढूँढना नहीं पड़ता। इन कारणों से लड़का लड़की दोनों बराबर समझे जाते हैं। कन्या भ्रूण हत्याएं नहीं होतीं। वहां पर स्त्रियों की संख्या पुरुषों की अपेक्षा ज्यादा है।

–831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा

200 बालिकाओं का शिविर दिल्ली में लगेगा

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में "विशाल आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर" रविवार, 20 मई से रविवार, 27 मई 2018 तक गीता भारती पब्लिक स्कूल, अशोक विहार, फेज–2, दिल्ली–110052 में आयोजित किया जा रहा है। कक्षा 6 से 12 वीं तक की बालिकायें शिविर में भाग ले पायेगी। अतः इच्छुक बालिकायें शीघ्र स्थान आरक्षित करवा लें, सम्पर्क करें–सौरभ गुप्ता, प्रधान शिक्षक, 9971467978। कन्याओं की 8 दिन की भोजन व्यवस्था के लिये आप सभी दानी महानुभावों का सहयोग अपेक्षित है, कृपया राशन आटा, दाल, चावल, सब्जी, मसाले, रिफाईण्ड, देसी घी, दूध आदि से सहयोग करके पुण्य के भागी बने। – वाई.पी. अग्रवाल, चेयरमैन

राजरानी अग्रवाल	नीता खन्ना	उर्मिला आर्या	अर्चना पुष्करना
शिविर संरक्षक	प्रभारी	प्रदेश अध्यक्ष	प्रदेश महामन्त्री

हरिद्वार में योग साधना शिविर

वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी के पावन सान्निध्य में योग साधना शिविर दिनांक 28 मार्च से 1 अप्रैल 2018 तक वैदिक आनन्द धाम योग आश्रम, हरिपुर कलां, हरिद्वार में लगेगा।

इच्छुक साधक सम्पर्क करें– शिवनारायण ग्रोवर, महामंत्री, फोनः 9813367867, 9711295710

दिल्ली में राष्ट्रीय शिक्षक अभ्यास शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में राष्ट्रीय शिक्षक अभ्यास शिविर शुक्रवार, 13 अप्रैल से रविवार,15 अप्रैल 2018 तक गुरूकुल खेडाखुर्द, दिल्ली–110082 में लगेगा। जिन शिविरार्थियों ने परिषद के तीन शिविर उत्तीर्ण किये हैं, वह शिविर में भाग ले सकेंगे। सभी इच्छुक शिक्षक वीरवार, 12 अप्रैल को सायं 5 बजे तक पंहुच जाये व शिविर समापन व दीक्षान्त समारोह रविवार, 15 अप्रैल 2018 को दोपहर 3 बजे से सायं 5 बजे तक होगा। स्थान आरक्षण हेतु सम्पर्क करें– सौरभ गुप्ता, संयोजक– 9971467978

गुरूकुल खेडाखुर्द दिल्ली का उत्सव

गुरूकुल खेडाखुर्द दिल्ली–110082 का वार्षिकोत्सव रविवार, 8 अप्रैल 2018 को प्रातः 8 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक सोल्लास मनाया जायेगा। इससे पूर्व 29 मार्च से 7 अप्रैल 2018 तक प्रातः 7 से 9 व सायं 5 से 7 बजे तक यज्ञ होगा। आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

–ब्रह्मप्रकाश मान, प्रधान –मनोज मान,मन्त्री –आचार्य सुधांशु, प्राचार्य

तपोवन आश्रम, देहरादून चलो

वैदिक भक्ति आश्रम, तपोवन, देहरादून का वार्षिक यज्ञ बुधवार, 9 मई से रविवार, 13 मई 2018 तक होगा। पूर्णाहूति व स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस समारोह रविवार, 13 मई 2018 को प्रातः 8 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक होगा। सभी आर्य जन नोट कर लें व सपरिवार दर्शन देवें–

दर्शन अग्निहोत्री, प्रधान प्रेमप्रकाश शर्मा, मन्त्री

हापुड़ में अनुपम आर्य का स्वागत व ई.रामऔतार अग्रवाल की श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हापुड़ के जिला अध्यक्ष अनुपम आर्य के नये शोरूम पर शुभकामनायें प्रदान करते राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य,प्रान्तीय अध्यक्ष आनन्दप्रकाश आर्य व महामंत्री महेन्द्र भाई। द्वितीय चित्र–ई श्री रामऔतार अग्रवाल (पिता श्री विकास अग्रवाल, प्रधान, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा हापुड़) की श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज हापुड़ (उ.प्र.) में डा.अनिल आर्य, सांसद राजेन्द्र अग्रवाल, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी व महेन्द्र भाई। संचालन प्रधान आनन्दप्रकाश आर्य ने किया।

सोनीपत कुण्डली में 21 कुण्डीय यज्ञ व उत्तम नगर में भजन संध्या सम्पन्न

रविवार, 25 फरवरी 2018, वैदिक यज्ञ प्रचार सभा,सैक्टर–13, रोहिणी, दिल्ली (श्री यज्ञदत आर्य द्वारा स्थापित) द्वारा टरकन सोसायटी,टी.डी.आई.कुण्डली, सोनीपत, हरियाणा में 21 कुण्डीय यज्ञ व वैदिक संत्संग का भव्य आयोजन किया गया। आचार्य विकास तिवारी ने यज्ञ करवाया व युवा गायक देव आर्य के मधुर भजन हुए। चित्र में श्रीमती पूनम व सुभाष अरोड़ा, सुमेधा का अभिनन्दन करते समारोह के मुख्य अतिथि डा. अनिल आर्य, आचार्य विकास तिवारी, डा. कृष्णलाल अरोड़ा (करनाल), संयोजक अरविन्द आर्य व प्रवीन आर्या। श्रीमती पुष्पा–इन्द्रकुमार आहूजा,सन्तोष भूटानी, उर्मिला–महेन्द्रपाल मनचन्दा, निर्मल जावा आदि उपस्थित थे। द्वितीय चित्र–रविवार, 25 फरवरी 2018,आर्य समाज,उत्तम नगर,दिल्ली में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के उपलक्ष्य में भजन संध्या का आयोजन किया गया। युवा गायक सुकांत आर्य,एटा का अभिनन्दन करते समारोह के मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य,आचार्य चांदसिंह योगी व समाज के कर्मठ मन्त्री श्री अमरसिंह सहरावत। श्री सेवक जगवानी, प्रधान राजकुमार भाटिया,बलदेव सचदेवा, भोपालसिंह आर्य,ईश्वरसिंह गुलिया,कृष्ण गर्ग, दिनेशसिंह आर्य, माधवसिंह आर्य, प्रवीन आर्या आदि भी उपस्थित थे।

आर्य समाज, अशोक विहार, फेज–1, दिल्ली में ऋषि बोधोत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 18 फरवरी 2018, आर्य समाज, अशोक विहार,फेज–1, दिल्ली में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव सोल्लास मनाया गया। चित्र में पुरस्कृत बच्चों के साथ मुख्य अतिथि डा. अनिल आर्य,प्रधान प्रेमकुमार सचदेवा,मन्त्री जीवनलाल आर्य, आनन्दप्रकाश आर्य, ओमप्रकाश आर्य, आशा भटनागर, विजय हंस, आचार्य उर्षवबुध, वन्दना आदि व द्वितीय चित्र में चण्डीगढ से पधारे श्री नरेन्द्र आहूजा विवेक के साथ पूर्व विधायक डा.महेन्द्र नागपाल,देवेन्द्र भगत,प्रेमकुमार सचदेवा,वेद भगत आदि।

उत्तर पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल ने निकाली शोभायात्रा

रविवार, 18 फरवरी 2018, वेद प्रचार मण्डल उत्तर पश्चिमी द्वारा आर्य समाज,सरस्वती विहार,दिल्ली से आर्य समाज,सन्देश विहार तक भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। चित्र में डा.अनिल आर्य,मण्डल के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खटटर,व्रतपाल भगत,अरूण आर्य,पार्षद वन्दना जेतली आदि। द्वितीय चित्र–आर्य समाज,रेलवे रोड,रानी बाग के द्वार पर स्वागत करते पूर्व एसीपी एस.के.आहूजा,तृप्ता आहूजा,राजीव आर्य आदि।

शोभायात्रा का आर्य समाज,पंचदीप,पीतमपुरा,दिल्ली पर स्वागत करते प्रधान आनन्दप्रकाश गुप्ता मित्रसेन आर्य व आर्य समाज,सन्देश विहार, दिल्ली में डा.अनिल आर्य का स्वागत करते प्रधाना अनिता आनन्द,मन्त्री देवमित्र आर्य,विजय आर्य,प्रवीन आर्या,दिनेश आर्य,पं.ज्ञानप्रकाश आर्य,इन्द्रा आहूजा आदि।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970